चाला पच्चो (सरना माँ की कहानी)

जोहे भगत
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

डॉ० हरि उराँव
पूर्व विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर कुँड़ुख़ विभाग
राँची विश्वविद्यालय,राँची

कहा जाता है कि एक परिवार में सात भाई थे। सातों की शादी हो चुकी थी और एक साथ रहा करते थे। परिवार में काफी सुख–चैन था। अन्न–धन्न की कमी न थी। एक दिन सातों के बीच बात हुई कि परिवार में किस स्त्री के हाथ में अधिक गुण है, जो परिवार को आर्थिक सम्पन्नता से भरा–पूरा बना सके, उसे धन्यवाद दिया जाना चाहिए। इस ध्येय से उन्होंने तय किया कि प्रत्येक स्त्री को बारी–बारी से घर चलाने का अवसर दिया जाए और जाँच करके देखा जाए तथा उसके प्रति धन्यवाद प्रकट की जाए। सर्वप्रथम बड़े भाई की स्त्री को यह कार्य–भार दिया गया कि वह साल भर परिवार चलाये, खर्च संभाले तथा दूसरी स्त्रियाँ नौकरानियों की भाँति रहें । किन्तु इसकी देख–रेख में परिवार गरीब होने लगा। खाने–पीने की चीजें घटने लगीं। परिवार में लोग सताये जाने लगे। यह देखकर भाइयों ने दूसरे भाई की स्त्री पर यह कार्य–भार सौंपा। किन्तु उसके साथ भी यही गति हुई। क्रमशः छठे भाई की बारी आयी परन्तु वह भी कामयाब न हुई। इस प्रकार छः भाइयों के स्त्रियों की जाँच हो चुकी थी। अन्त में सातवें भाई की स्त्री को घर चलाने का कार्य मिला। उसके समय में पूरे परिवार को भरपूर खाना मिलने लगा । यह एक सेर का अनाज पकाती, तो दस सेर के बराबर हो जाता था। इस प्रकार परिवार में गरीबी मिट चली थी और शान्ति भी थी।

बड़े भाइयों ने धन्यवाद के लिए यह योजना बनायी थी किन्तु यह ईर्ष्या–द्वेष में बदल गया। वे कहने लगे कि हमारी कमाई का सारा धन इस स्त्री के हाथ चला जाता है। यह भूतनी स्त्री है, जो हमारी बराकत को घटा देती है। अवश्य ही डैन या जादूगारनी होगी। अतः इसे मार डालना चाहिए । उन्होंने उसे मार डालने का उपाय सोचना आरंभ कर दिया ।

बुरे गुणवाली समझकर उसे मार डालने का जुल्म बढ़ गया। छोटे भाई को अपनी स्त्री से अपार प्रेम था। भला अपनी स्त्री से किसे प्रेम नहीं होता ! उसने देखा कि दूसरे भाइयों की स्त्रियाँ घर चला नहीं सकीं और उसकी स्त्री बखूबी से निभाकर अपना परिचय दे चुकी थी। किन्तु अपने भाइयों के प्रोत्साहित किये जाने पर उसने सोचा कि परिवार की सुखः शान्ति के लिए एक स्त्री का मर जाना अहितकर नहीं होगा। अत–उसने कटार से प्रहार कर उसकी हत्या कर देना चाहा किन्तु साहस न जुटा सका ।

स्त्री गर्भवती हो चुकी थी। उसे दुःख कष्ट भी होता था। उसका पति उसकी जान लेने के लिए हर तरह का उपाय सोचता रहा किन्तु उपाय सोच–मात्र ही रह गया। पुनः उसने सोचा कि मार डालने के बजाय कहीं जंगल में छोड़कर भाग जाना चाहिए। एक दिन वह उसे लेकर किसी काम के बहाने दूर जंगल गया। साथ में एक बलुआ (कटार) भी लेता गया। वे ऐसे निर्जन स्थान में पहुँचे जहाँ किसी के पहुँचने की संभावना न थी। वे विश्राम के लिए एक बड़े शाल पेड़ के नीचे सो गये। गर्भवती स्त्री थकी–मान्दी, जल्द ही सो गयी। पुरुष तो मात्र बहाना के लिए सोया था। स्त्री के गहरी नींद में सो जाने पर उसे

काटने के लिए बलुआ उठाया किन्तु गर्भ में पल रहे बच्चे के मोह के कारण छोड़ दिया और उसे सोयी हुई हालत में ही छोड़कर घर की राह पकड़ लिया ।

घर लौटते वक्त उसने बन्दा और खैर पेड़ काटकर अपने बलुए की धार को लाल कर लिया मानो वह खून से रंगा हो। घर पहुँच कर सबूत के लिए लाल धार बलुए को दिखाकर कहा कि जंगल में विश्राम के लिए सो रही अपनी स्त्री को काटकर मार डाला। सबों ने उसके इस कथन पर विश्वास किया। किन्तु परिवार में पहले की अपेक्षा और अधिक तकलीफ होने लगी । सातवाँ भाई तो लकड़ी बेचकर अपनी जीविका चलाने लगा । गरीबी के कारण दूसरी शादी करने की भी कोई उम्मीद बाकी न रह गयी थी।

इधर जंगल में सोकर उठी स्त्री अपना पुरुष को देखती है, तो उसका कहीं पता नहीं। उसे ढूँढ़ने का उसने यथासंभव प्रयास किया किन्तु असफल रही। अन्त में अपनी जीविका के लिए कन्द–मूल, साग–पात, फूल–फल ढूँढ़ने लगी और अपनी साड़ी के आँचल से धागा निकाल कर उस पेड़ को सात चक्कर लपेट दी, जिसके नीचे वह सोयी थी। यह इसलिए था कि उसका पति लौटकर आए, तो याद कर सके और स्वयं को न भूल जाने के लिए भी था। अपने पुरुष की आशा में प्रतिदिन रात को उसी पेड़ के नीचे सोने जाती थी ताकि वह कहीं गया हो, तो आ जाए। उसी पेड़ पर हजारों कौए आकर सोते थे तथा उनमें आपसी बात–चीत होती थी कि कौन कहाँ–कहाँ जाते हैं और क्या–क्या मिलता है। इसी सिलसिले में कुछ कौओं ने कहा कि हम पूरब की ओर जाते हैं। उधर एक राजा का कान सड़ रहा है जिसे प्रत्येक दिन काटकर फेंकता है और हम खाते हैं। किन्तु अब वह यह समाचार फैला दिया है कि जो उसके कान का दवा कर दे, उसे आधा राज्य दे दिया जाएगा । इस पर एक कौए ने कहा था– ''इसकी तो सहज दवा है, बस कौए का बीट लगा दो, तुरन्त अच्छा हो जाएगा लेकिन अच्छा खाना मिल रहा है तो क्यों बतलाना है ?'' अतः कौओं ने दवा बतलाने से इन्कार किया था। वह स्त्री यह रामकहानी सुन चुकी थी।

जब राजा के सिपाही वैद्य की खोज में निकने, तो संयोगवश जंगल में गुजरते उनकी भेंट उस स्त्री से हो गयी। उन्होंने उसे राजा के कान सड़ने के विषय बताया तथा दवा कर देने वाले को आधा राज्य दे दिये जाने वाली बात भी बतायी। स्त्री ने कहा कि मैं दवा जानती हूँ। सिपाही उसे लेकर राजा के पास पहुँचे । स्त्री ने कौए का वीट लेकर राजा के कान में लगा दिया और उसका कान–सड़न ठीक हो गया।

राजा ने अपने वचनानुसार उसे आधा राज्य दे दिया। वह राजदरबार में रहने लगी और वहीं उसने अपने गर्भ में पल रहे बच्चे को जन्म दिया। दोनों माँ–बेटे आनन्दमय जीवन यापन करने लगे। किन्तु वह स्त्री उस शाल पेड़ के नीचे प्रत्येक वर्ष पूजा के लिए जाने लगी थी।

एक दिन उसका पुरुष लकड़ी बेचने राजमहल आया। स्त्री उसे देखकर पहचान गयी किन्तु अपने को व्यक्त नहीं की। वह पैसे लेकर घर चला गया। दूसरे दिन पुनः लकड़ी लेकर राजमहल आया, तो स्त्री ने सिपाहियों द्वारा उसे पकड़ लाने को कहा। वह तो डर गया था किन्तु बुलाये जाने पर आ गया। उसने स्त्री के पूछे जाने पर अपना तथा परिवार का सारा हाल बताया। स्त्री भी अपने को व्यक्त किये बिना न रह सकी। फिर दोनों स्त्री–पुरुष साथ–साथ जीवन बिताने लगे ।

पति के साथ रहने पर भी वह उस शाल पेड़ के पास पूजा करने के लिए जाती ही और मरने तक जाती रही। इसी पुजारिन बुढ़िया का नाम 'सरना बुढ़िया' या 'झकरा बुढ़िया' पड़ा है।

संदर्भ सूची

सरना फूल
उराँव संस्कृति
कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा कत्थटूड़